Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आरती - माला

[श्रीभाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार द्वारा विरचित आरतियाँ]

[इस पुस्तकको या इसके किसी अंशको प्रकाशित करने, उद्धृत करने अथवा किसी भी भाषामें अनूदित करनेका अधिकार सबको है ।]

प्रकाशन - तिथि
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, वि० सं० २०३४

न्योछावर
एक रुपया पचास पैसे

मुद्रक
राधा प्रेस
गान्धीनगर, दिल्ली-११००३१

प्रकाशन विभाग.
श्रीकृष्ण - जन्मस्थान - सेवासंघ
मथुरा—२८१००१ (उ० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नित्यलीलालीन श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आरती - माला

[श्रीभाईजी श्रीहनुमानप्रसादजी पोद्दार द्वारा विरचित आरतियाँ]

[इस पुस्तकको या इसके किसी अंशको प्रकाशित करने, उद्धृत करने अथवा किसी भी भाषामें अनूदित करनेका अधिकार सबको है ।]

प्रकाशन - तिथि
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, वि० सं० २०३४

न्योछावर
एक रुपया पचास पैसे

मुद्रक
राधा प्रेस
गान्धीनगर, दिल्ली-११००३१

प्रकाशन विभाग.
श्रीकृष्ण - जन्मस्थान - सेवासंघ
मथुरा—२८१००१ (उ० प्र०)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आरती क्या है और कैसे करनी चाहिये

आरतीको 'आरात्रिक' अथवा 'आरार्तिक' और 'नीराजन' भी कहते हैं। पूजाके अन्तमें आरती की जाती है। पूजनमें जो त्रुटि रह जाती है, आरतीसे उसकी पूर्ति होती है। स्कन्दपुराणमे कहा गया है—

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत् कृतं पूजनं हरेः।
सर्वं सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे॥

'पूजन मन्त्रहीन और क्रियाहीन होनेपर भी नीराजन (आरती) कर लेनेसे उसमें सारी पूर्णता आ जाती है।'

आरती करनेका ही नहीं, आरती देखनेका भी बड़ा पुण्य लिखा है। हरिभक्तिविलासमें एक श्लोक है—

नीराजनं च यः पश्येद् देवदेवस्य चक्रिणः।
सप्तजन्मनि विप्रः स्यादन्ते च परमं पदम्॥

'जो देवदेव चक्रधारी श्रीविष्णुभगवान्‌की आरती (सदा) देखता है, वह सात जन्मोंतक ब्राह्मण होकर अन्तमें परमपदको प्राप्त होता है।'

विष्णुधर्मोत्तरमें आया है—

धूपं चारात्रिकं पश्येत् कराभ्यां च प्रवन्दते।
कुलकोटिं समुद्धृत्य याति विष्णोः परं पदम्॥

'जो धूप और आरतीको देखता है और दोनों हाथोंसे आरती लेता है, वह करोड़ पीढ़ियोंका उद्धार करता है और भगवान् विष्णुके परमपदको प्राप्त होता है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आरतीमें पहले मूलमन्त्र (जिस देवताका जिस मन्त्रसे पूजन किया गया हो उस मन्त्र) के द्वारा तीन बार पुष्पाञ्जलि देनी चाहिए और ढोल, नगारे, शङ्ख, घड़ियाल आदि महावाद्योंके तथा जयजयकारके शब्दके साथ शुभ पात्रमें घृतसे या कपूरसे विषम संख्याकी अनेक बत्तियाँ जलाकर आरती करनी चाहिए—

ततश्च मूलमन्त्रेण दत्त्वा पुष्पाञ्जलित्रयम् ।
महानीराजनं कुर्यान्महावाद्यजयस्वनैः ।।
प्रज्वालयेत् तदर्थं च कर्पूरेण घृतेन वा ।
आरात्रिकं शुभे पात्रे विषमानेकवर्तिकम् ।।

साधारणतः पाँच बत्तियोंसे आरती की जाती है। इसे 'पञ्चप्रदीप' भी कहते हैं। एक, सात या उससे भी अधिक बत्तियोंसे आरती की जाती है। कपूरसे भी आरती होती है। पद्मपुराणमें आया है—

कुंकुमागुरु - कर्पूर - घृत - चन्दननिर्मिताः ।
वर्तिकाः सप्त वा पञ्च कृत्वा वा दीपवर्त्तिकाम् ।।
कुर्यात् सप्तप्रदीपेन शङ्खघण्टादिवाद्यकैः ।

'कुंकुम, अगर, कपूर, घृत और चन्दनकी सात या पाँच बत्तियाँ बनाकर अथवा दियेकी (रुई और घीकी) बत्तियाँ बनाकर सात बत्तियोंसे शङ्ख, घण्टा आदि बाजे बजाते हुए आरती करनी चाहिए।'

आरतीके पाँच अङ्ग होते हैं—

पञ्च नीराजनं कुर्यात् प्रथमं दीपमालया ।
द्वितीयं सोदकाब्जेन तृतीयं धौतवाससा ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चूताश्वत्थादिपत्रैश्च चतुर्थं परिकीर्तितम् ।
पञ्चमं प्रणिपातेन साष्टाङ्गेन यथाविधि ।।

'प्रथम दीपमालाके द्वारा, दूसरे जलयुक्त शङ्खसे, तीसरे धुले हुए वस्त्रसे, चौथे आम और पीपल आदिके पत्तोंसे और पाँचवें साष्टाङ्ग दण्डवत्‌से आरती करे ।'

'आरती उतारते समय सर्वप्रथम भगवान्‌की प्रतिमाके चरणोंमें उसे चार बार घुमाये, दो बार नाभि-देशमें, एक बार मुखमण्डलपर और सात बार समस्त अङ्गोंपर घुमाये ।'

आदौ चतुः पादतले च विष्णो-
द्वौ नाभिदेशे मुखबिम्ब एकम् ।
सर्वेषु चाङ्गेषु च सप्तवारान्-
आरात्रिकं भक्तजनस्तु कुर्यात् ।।

यथार्थमें आरती पूजनके अन्तमें इष्टदेवताकी प्रसन्नता-के हेतु की जाती है । इसमें इष्टदेवको दीपक दिखानेके साथ ही उनका स्तवन तथा गुणगान किया जाता है । आरतीके दो भाव हैं, जो क्रमशः 'नीराजन' और 'आरती' शब्दसे व्यक्त हुए हैं । नीराजन (निःशेषेण राजनम्—प्रकाशनम्) का अर्थ है—विशेषरूपसे, निःशेषरूपसे प्रकाशित करना । अनेक दीप-बत्तियाँ जलाकर विग्रहके चारों ओर घुमानेका अभिप्राय यही है कि पूरा-का-पूरा विग्रह एड़ीसे चोटीतक प्रकाशित हो उठे—चमक उठे, अङ्ग-प्रत्यङ्ग स्पष्टरूपसे उद्भासित हो जाय, जिसमें दर्शक या उपासक भलीभाँति देवताकी रूप-छटाको निहार सके,

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

हृदयंगम कर सकें। दूसरा 'आरती' शब्द (जो संस्कृतके 'आर्ति'का प्राकृत रूप है और जिसका अर्थ है—अरिष्ट) विशेषतः माधुर्य-उपासनासे सम्बन्धित है। 'आरती वारना' का अर्थ है—आर्ति-निवारण, अनिष्टसे अपने प्रियतम प्रभुको बचाना। इस रूपमें यह एक तान्त्रिक क्रिया है, जिससे प्रज्वलित दीपक अपने इष्टदेवके चारों ओर घुमाकर उनकी सारी विघ्न-बाधा टाली जाती है। आरती लेनेसे भी यही तात्पर्य है उनकी 'आर्ति' (कष्ट) को अपने ऊपर लेना। बलैया लेना, बलिहारी जाना, बलि जाना, वारी जाना, न्यौछावर होना आदि सभी प्रयोग इसी भावके द्योतक हैं। इसी रूपमें छोटे बच्चोंकी माताएँ तथा बहिनें लोकमें भी आरती (या आरत) उतारती हैं। यह 'आरती' मूलरूपमें कुछ मन्त्रोच्चारणके साथ केवल कष्टनिवारणके भावसे उतारी जाती रही होगी। आजकल वैदिक उपासनामें उसके साथ-साथ वैदिक मन्त्रोंका उच्चारण होता है तथा पौराणिक एवं तान्त्रिक उपासनामें उसके साथ सुन्दर-सुन्दर भावपूर्ण पद्य-रचनाएँ गायी जाती हैं। ऋतु, पर्व, पूजाके समय आदि भेदोंसे भी आरती की जाती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

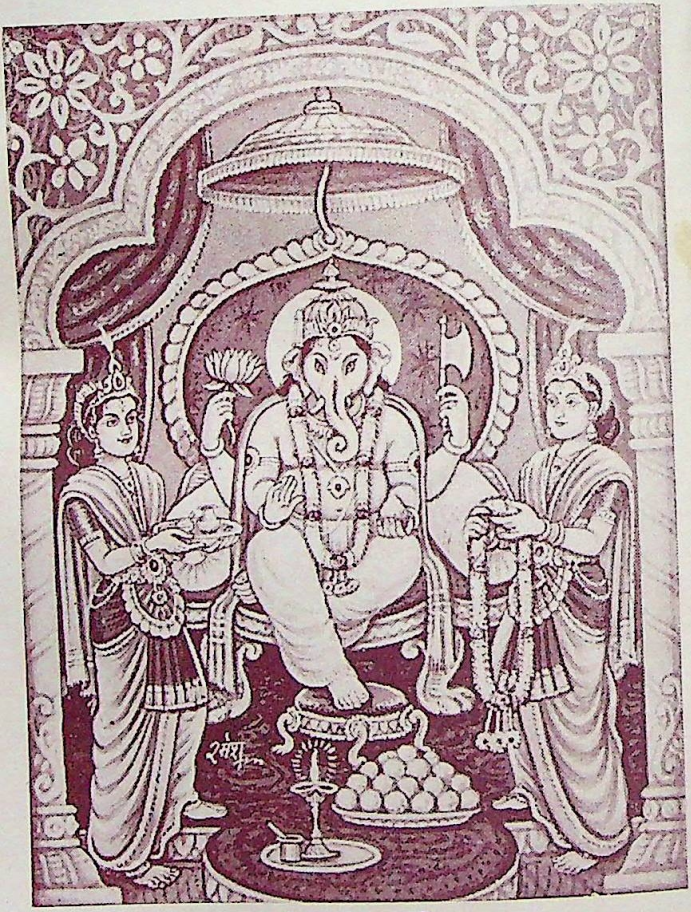

श्रीगणपति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भगवान् श्रीगणेशजी

आरति गजवदन विनायककी।
सुर - मुनि - पूजित गणनायककी ।। टेक ।।

एकदंत शशिभाल गजानन,
विघ्नविनाशक शुभगुण - कानन,
शिवसुत वन्द्यमान - चतुरानन,
दुःखविनाशक सुखदायककी ।।सुर०।।

ऋद्धि - सिद्धि - स्वामी समर्थ अति,
विमल बुद्धि दाता सुविमल - मति,
अघ-वन-दहन, अमल अविगत-गति,
विद्या - विनय - विभव - दायककी ।।सुर०।।

पिङ्गलनयन, विशाल शुंडधर,
धूम्रवर्ण शुचि वज्रांकुश - कर,
लम्बोदर बाधा - विपत्ति - हर,
सुरवन्दित सब बिधि लायककी ।।सुर०।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विराट-रूप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सर्वरूप भगवान्

जय जगदीश हरे, प्रभु ! जय जगदीश हरे।
मायातीत, महेश्वर, मन - वच - बुद्धि परे ॥

आदि, अनादि, अगोचर, अविचल, अविनाशी।
अतुल, अनन्त, अनामय, अमित, शक्ति - राशी ॥

अमल, अकल, अज, अक्षय, अव्यय, अविकारी।
सत - चित - सुखमय, सुन्दर, शिव सत्ताधारी ॥

विधि - हरि - शंकर - गणपति - सूर्य - शक्तिरूपा।
विश्व चराचर तुम ही, तुम्हीं विश्वभूपा ॥

माता - पिता - पितामह - स्वामि - सुहृद - भर्ता।
विश्वोत्पादक पालक रक्षक संहर्ता ॥

साक्षी, शरण, सखा, प्रिय, प्रियतम, पूर्ण प्रभो।
केवल - काल, कलानिधि, कालातीत, विभो ॥

राम, कृष्ण, करुणामय, प्रेमामृत - सागर।
मन - मोहन मुरलीधर, नित - नव नटनागर ॥

सब बिधि हीन, मलिन मति, हम अति पातकि-जन।
प्रभु-पद-विमुख अभागी, कलि-कलुषित तन-मन ॥

आश्रय - दान दयार्णव ! हम सबको दीजै।
पाप-ताप हर हरि ! सब, निज - जन कर लीजै ॥

जय जगदीश हरे, प्रभु ! जय जगदीश हरे।
मायातीत, महेश्वर, मन - वच - बुद्धि परे ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री राधा - कृष्ण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भगवान् श्रीराधा - कृष्ण

ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण, श्रीराधाकृष्णाय नमः ।।

चंद्रमुखी चंचल चितचोरी । (राधा)
सुघर साँवरा सूरत भोरी ।। (कृष्ण)
श्यामा-श्याम एक-सी जोरी । (राधाकृष्ण)
श्रीराधाकृष्णाय नमः ।।

ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण, श्रीराधाकृष्णाय नमः ।।

पचरँग चूनर केसर क्यारी । (राधा)
पट पीतांबर कामर कारी ।। (कृष्ण)
एक रूप अनुपम छबि प्यारी । (राधाकृष्ण)
श्रीराधाकृष्णाय नमः ।।

ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण, श्रीराधाकृष्णाय नमः ।।

चंद्र - चंद्रिका चमचम चमकै । (राधा)
मोर मुकुट सिर दमदम दमकै ।। (कृष्ण)
युगल-प्रेम रस झमझम झमकै । (राधाकृष्ण)
श्रीराधाकृष्णाय नमः ।।

ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण, श्रीराधाकृष्णाय नमः ।।

कस्तूरी - कुंकुम - जुत बिंदा । (राधा)
चंदन चारु तिलक ब्रज-चंदा ।। (कृष्ण)
सुहृद लाड़ली लाल सुनंदा । (राधाकृष्ण)
श्रीराधाकृष्णाय नमः ।।

ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण, श्रीराधाकृष्णाय नमः ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घूँमघुमारो धाँघर सोहै । (राधा)
कटि कछनी कमलापति सोहै ।। (कृष्ण)
कमलासन सुर-मुनि-मन मोहै । (राधाकृष्ण)
श्रीराधाकृष्णाय नमः ।।
ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण, श्रीराधाकृष्णाय नमः ।।

रत्नजटित आभूषण सुँदर । (राधा)
कौस्तुभमणि कमलांकित नटवर।। (कृष्ण)
रणत्क्वणत् मुरली-ध्वनि मनहर। (राधाकृष्ण)
श्रीराधाकृष्णाय नमः ।।
ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण, श्रीराधाकृष्णाय नमः ।।

मंद हँसन मतवारे नैना । (राधा)
मनमोहन मन हारे सैना ।। (कृष्ण)
मृदु मुसकावनि मीठे बैना । (राधाकृष्ण)
श्रीराधाकृष्णाय नमः ।।
ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण, श्रीराधाकृष्णाय नमः ।।

श्रीराधा भव - बाधा - हारी ।। (राधा)
संकट - मोचन कृष्ण मुरारी । (कृष्ण)
एक शक्ति, एकहि आधारी । (राधाकृष्ण)
श्रीराधाकृष्णाय नमः ।।
ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण, श्रीराधाकृष्णाय नमः ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जगज्ज्योति, जगजननी माता। (राधा)
जगजीवन, जग-पितु, जग-दाता। (कृष्ण)
जगदाधार, जगद्विख्याता। (राधाकृष्ण)
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥

ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण, श्रीराधाकृष्णाय नमः॥

राधा राधा कृष्ण कन्हैया। (राधा)
भव - भय सागर पार लगैया॥ (कृष्ण)
मंगल - मूरति, मोक्ष - करैया। (राधाकृष्ण)
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥

ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण, श्रीराधाकृष्णाय नमः॥

सर्वेश्वरी, सर्व - दुख - दाहन। (राधा)
त्रिभुवनपति, त्रयताप-नसावन॥ (कृष्ण)
परम देवि, परमेश्वर पावन। (राधाकृष्ण)
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥

ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण, श्रीराधाकृष्णाय नमः॥

त्रिसमय युगलचरण चित ध्यावै।
सो नर जगत परमपद पावै॥
राधाकृष्ण 'छैल' मन भावै।
श्रीराधाकृष्णाय नमः॥

ॐ जय श्रीराधा, जय श्रीकृष्ण, श्रीराधाकृष्णाय नमः॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रीवृषभानुसुताजी

आरति श्रीवृषभानुसुताकी ।
मंजु मूर्ति मोहन - ममताकी ।। टेक ।।

त्रिविध तापयुत संसृति नाशिनि,
विमल विवेक विराग विकासिनि,
पावन प्रभु - पद - प्रीति प्रकाशिनि,
सुन्दरतम छवि सुन्दरताकी ।।१।। आरति० ।।

मुनि - मन - मोहन मोहन मोहनि,
मधुर मनोहर मूरति सोहनि,
अविरल प्रेम - अमिय - रस दोहनि,
प्रिय अति सदा सखी ललिताकी ।।२।। आरति० ।।

संतत सेव्य संत - मुनि - जनकी,
आकर अमित दिव्यगुन - गनकी,
आकर्षिणी कृष्ण - तन - मनकी,
अति अमूल्य सम्पति समताकी ।।३।। आरति० ।।

कृष्णात्मिका, कृष्ण - सहचारिणि,
चिन्मय वृन्दा - विपिन - विहारिणि,
जगज्जननि जग - दुःखनिवारिणि,
आदि अनादि शक्ति विभुताकी ।।४।। आरति० ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आरति श्रीवृषभानुललीकी ।
सत-चित-आनँद-कंद - कलीकी । टेक।।
भयभंजिनि भव - सागर - तारिणि,
पाप-ताप - कलि - कलमष - हारिणि,
दिव्यधाम गोलोक - विहारिणि,
जनपालिनि जगजननि भलीकी ।।१।। आरति० ।।
अखिल विश्व आनन्द - विधायिनि,
मंगलमयी सुमंगलदायिनि,
नंदनँदन - पद - प्रेम प्रदायिनि,
अमिय-राग-रस रंग-रलीकी ।।२।। आरति० ।।
नित्यानन्दमयी आह्लादिनि,
आनँदघन - आनंद - प्रसाधिनि,
रसमयि, रसमय - मन - उन्मादिनि,
सरस कमलिनी कृष्ण-अलीकी ।।३।। आरति० ।।
नित्य निकुंजेश्वरि राजेश्वरि,
परम प्रेमरूपा परमेश्वरि,
गोपिगणाश्रयि गोपिजनेश्वरि,
विमल विचित्र भाव-अवलीकी ।।४।। आरति० ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

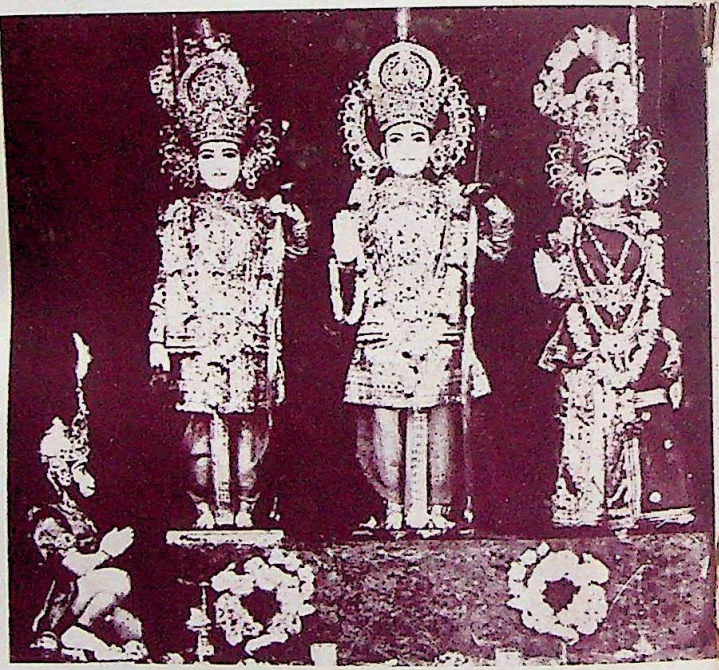

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भगवान् मर्यादा पुरुषोत्तम

आरती कीजै श्रीरघुबरकी।
सत चित आनँद शिव सुंदरकी ।।टेक।।
दशरथ - तनय कौसिला - नन्दन,
सुर - मुनि - रक्षक दैत्य - निकन्दन,
अनुगत - भक्त भक्त - उर - चन्दन,
मर्यादा - पुरुषोत्तम - वरकी ।। सत चित० ।।
निर्गुण - सगुण, अरूप - रूपनिधि,
सकल लोक - वन्दित विभिन्न विधि,
हरण शोक - भय, दायक सब सिधि,
मायारहित दिव्य नर-वरकी ।। सत, चित० ।।
जानकिपति सुराधिपति जगपति,
अखिल लोक पालक त्रिलोक - गति,
विश्ववन्द्य अनवद्य अमित - मति
एकमात्र गति सचराचरकी ।। सत चित० ।।
शरणागत - वत्सल - व्रतधारी,
भक्त - कल्पतरु - वर असुरारी,
नाम लेत जग पावनकारी,
वानर-सखा दीन-दुख-हरकी ।। सत चित० ।।

卐

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रीजानकीजी

आरति श्रीजनक - दुलारीकी ।
सीताजी रघुबर - प्यारीकी ।।टेक।।
जगत - जननि जगकी विस्तारिणि,
नित्य सत्य साकेत - विहारिणि,
परम दयामयि दीनोद्धारिणि,
मैया भक्तन-हितकारीकी ।।सीताजी०।।

सती शिरोमणि पति - हित - कारिणि,
पति - सेवा हित वन - वन चारिणि,
पति-हित पति-वियोग-स्वीकारिणि,
त्याग-धर्म-मूरति-धारीकी ।।सीताजी०।।

विमल कीर्ति सब लोकन छाई,
नाम लेत पावन मति आई,
सुमिरत कटत कष्ट दुखदाई,
शरणागत-जन-भय-हारीकी ।।सीताजी०।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रीअंजनीकुमारजी

आरति श्रीअंजनिकुमारकी ।
शिवस्वरूप मारुतनन्दन, केसरी-सुअन कलियुग-कुठारकी ।
हियमें राम - सीय नित राखत,
मुखसों राम - नाम - गुण भाखत,
सुमधुर भक्ति - प्रेम - रस चाखत,
मङ्गलकर मङ्गलाकारकी ।।आरति०।।
विस्मृत बल-पौरुष, अतुलित बल,
दहन दनुज-वन हित, दावानल,
ज्ञानि-मुकुट-मणि, पूर्ण गुण सकल,
मंजु भूमिशुभ सदाचारकी ।।आरति०।।
मन-इन्द्रिय-विजयी, विशाल मति,
कलानिधान, निपुण गायक अति,
छन्द-व्याकरण-शास्त्र अमित गति,
रामभक्त अतिशय उदारकी ।।आरति०।।
पावन परम सुभक्ति प्रदायक,
शरणागतको सब सुखदायक,
विजयी वानर - सेना - नायक,
सुगति - पोतके कर्णधारकी ।।आरति०।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

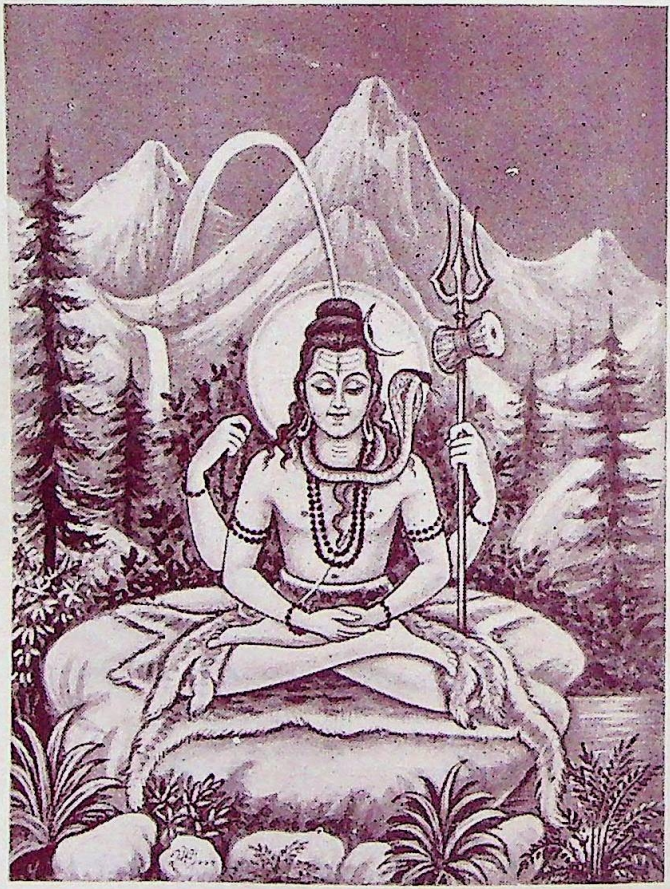

श्रीमहादेवजी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भगवान् महादेव

हर हर हर महादेव !
सत्य, सनातन, सुन्दर, शिव ! सबके स्वामी
अविकारी, अविनाशी, अज, अन्तर्यामी ।।हर हर०।।
आदि, अनन्त, अनामय, अकल, कलाधारी ।
अमल, अरूप, अगोचर, अविचल, अघहारी ।।हर हर०।।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, तुम त्रिमूर्तिधारी ।
कर्ता, भर्ता, धर्ता, तुम ही संहारी ।।हर हर०।।
रक्षक, भक्षक, प्रेरक, प्रिय औढरदानी ।
साक्षी, परम अकर्ता, कर्ता, अभिमानी ।।हर हर०।।
मणिमय-भवन-निवासी, अति भोगी, रागी ।
सदा श्मशान-बिहारी, योगी, वैरागी ।।हर हर०।।
छाल-कपाल, गरल-गल, मुण्डमाल, व्याली ।
चिताभस्मतन, त्रिनयन, अयनमहाकाली ।।हर हर०।।
प्रेत - पिशाच - सुसेवित, पीतजटाधारी ।
विवसन विकट रूपधर रुद्र प्रलयकारी । हर हर०।।
शुभ्र, सौम्य, सुरसरिधर, शशिधर, सुखकारी ।
अतिकमनीय, शान्तिकर, शिवमुनि-मन-हारी ।।हर हर०।।
निर्गुण, सगुण, निरञ्जन, जगमय, नित्य प्रभो ।
कालरूप केवल हर ! कालातीत विभो ।।हर हर०।।
सत्, चित्, आनँद, रसमय, करुणामय धाता ।
प्रेम-सुधा-निधि, प्रियतम, अखिल विश्व-त्राता ।।हर हर०।।
हम अतिदीन, दयामय ! चरण-शरण दीजै ।
सब विधि निर्मल मतिकर अपना करि लीजै ।।हर हर०।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रीदुर्गाजी

जगजननी जय ! जय !! माँ ! जगजननी जय ! जय !!
भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय जय ।।
तू ही सत - चित - सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा ।
सत्य सनातन सुन्दर पर - शिव सुर - भूपा ।।
आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी ।
अमल अनन्त अगोचर अज आनँदराशी ।।
अविकारी, अघहारी, अकल, कलाधारी ।
कर्ता विधि, भर्ता हरि, हर सँहारकारी ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तू विधिवधू, रमा, तू उमा, महामाया।
मूल प्रकृति, विद्या तू, तू जननी, जाया॥
राम कृष्ण तू, सीता, ब्रजरानी राधा।
तू वाञ्छाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा॥
दश विद्या, नव दुर्गा, नाना शस्त्रकरा।
अष्टमातृका, योगिनि, नव - नव - रूप - धरा॥
तू परधामनिवासिनि महाविलासिनि तू।
तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डव - लासिनि तू॥
सुर - मुनि - मोहिनि सौम्या तू शोभाधारा।
विवसन विकट - सरूपा, प्रलयमयी धारा॥
तू ही स्नेहसुधामयि, तू अति गरलमना।
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि - तना॥
मूलाधारनिवासिनि, इह - पर - सिद्धिप्रदे।
कालातीता काली, कमला तू वरदे॥
शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी।
भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले ! वेदत्रयी॥
हम अति दीन दुखी माँ ! विपत-जल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे॥
निज स्वभाववश जननी ! दयादृष्टि कीजै।
करुणा कर करुणामयि ! चरण - शरण दीजै॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

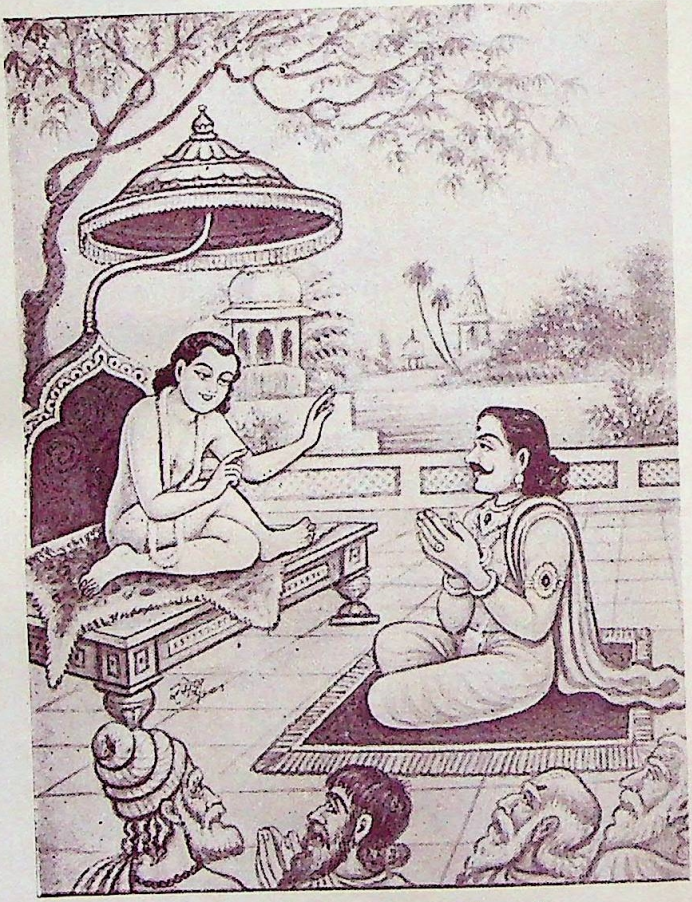

श्रीशुकदेवजी द्वारा राजा परीक्षितको
श्रीमद्भागवत-प्रवचन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रीमद्भागवत

आरति अतिपावन पुरानकी ।
धर्म - भक्ति - विज्ञान - खानकी ॥ टेक ॥
महापुराण भागवत निर्मल ।
शुक-मुख-विगलित निगम-कल्प-फल ।
परमानन्दसुधा - रसमय कल ।
लीला-रति-रस - रसनिधानकी ॥आरति०॥
कलिमल-मथनि त्रिताप-निवारिणि ।
जन्ममृत्युमय भव - भयहारिणि ।
सेवत सतत सकल सुखकारिणि ।
सुमहौषधि हरि-चरित-गानकी ॥आरति०॥
विषय-विलास - विमोह-विनाशिनि ।
विमल विराग विवेक विकाशिनि ।
भगवत् - तत्त्व - रहस्य - प्रकाशिनि ।
परम ज्योति परमात्मज्ञानकी ॥आरति०॥
परमहंस - मुनि - मन उल्लासिनि ।
रसिक-हृदय रस-रास-विलासिनि ।
भुक्ति-मुक्ति- रति - प्रेम - सुदासिनि ॥
कथा अकिञ्चन-प्रिय सुजानकी ॥आरति०॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

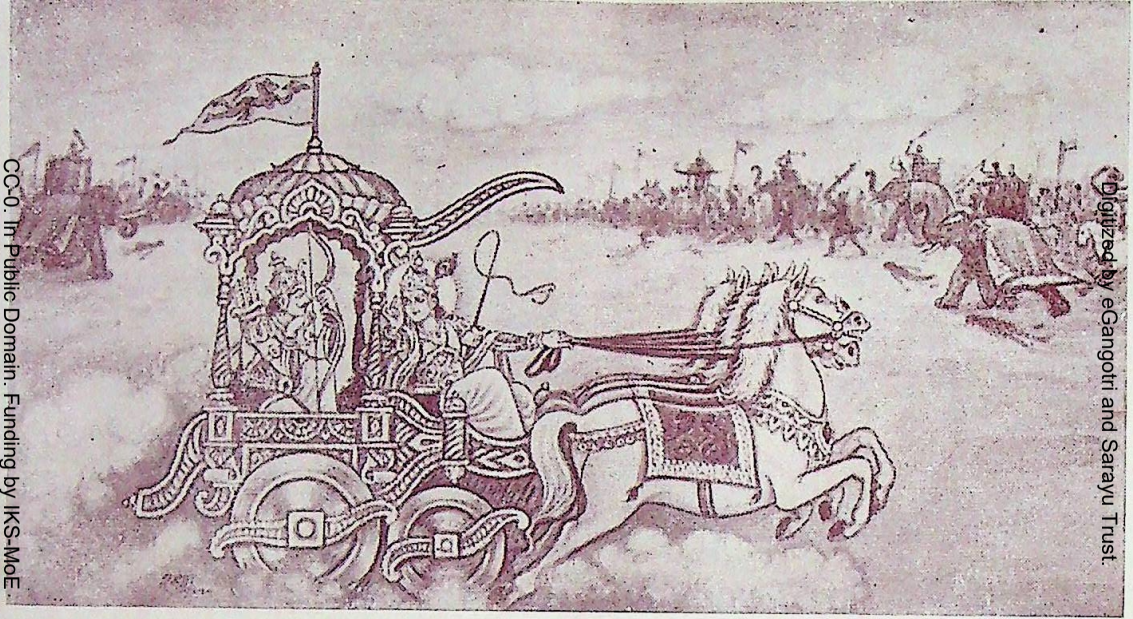

अर्जुनको गीताका उपदेश

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE
Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रीमद्भगवद्गीता

जय भगवद्गीते, माँ जय भगवद्गीते।
हर - हिय - कमल - विहारिणि सुन्दर सुपुनीते ।।

कर्म - सुमर्म - प्रकाशिनि कामासक्तिहरा।
तत्त्व - ज्ञान विकाशिनि विद्या ब्रह्म - परा ।।

निश्चल - भक्ति - विधायिनि निर्मल मलहारी।
शरण - रहस्य - प्रदायिनि सब विधि सुखकारी ।।

राग - द्वेष - विदारिणि कारिणि मोद सदा।
भव - भय - हारिणि तारिणि परमानन्दप्रदा ।।

आसुर-भाव-विनाशिनि नाशिनि-तम-रजनी।
दैवी - सद्गुण - दायिनि हरि - रसिका सजनी ।।

समता - त्याग - सिखावनि हरिमुखकी बानी।
सकल शास्त्रकी स्वामिनि, श्रुतियोंकी रानी ।।

दया - सुधा - बरसावनि मातु ! कृपा कीजै।
हरि - पद - प्रेम दान कर अपनो कर लीजै ।।

जय भगवद्गीते, माँ जय भगवद्गीते।
हर - हिय - कमल - विहारिणि सुन्दर सुपुनीते ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रीगायत्रीजी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रीगायत्रीजी

आरति श्रीगायत्रीजीकी । स्मितवदना सावित्रीजीकी ।।

यज्ञप्रिया यज्ञमयि वाणी ।
लक्ष्मी वेदजननि ब्रह्माणी ।
वृषभासना रुचिर रुद्राणी ।।
मङ्गलमयी परम सुश्रीकी ।।आरति०।।

सकल वेदमन्त्रोंकी स्वामिनि ।
सुर सेविता सुमङ्गल - धामिनि ।
शीतल नित्य दीप्तिमयि दामिनि ।।
तमहारिणि विशुद्धतम धीकी ।।आरति०।।

दुःख - दुरित - दारिद्र्य - विनाशिनि ।
सुख-शुभ-सुकृति-विभूति-विकासिनि ।
सतत सच्चिदानन्द विलासिनि ।।
नाशिनि - महामोह - रजनीकी ।।आरति०।।

विश्वजननि मा विश्वाधारा ।
पावन स्नेह-सुधाकी धारा ।
तुरत बहाकर करुणागारा ।।
दूर करो सब ज्वाला जीकी ।।

आरति श्रीगायत्रीजीकी । स्मितवदना सावित्रीजीकी ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

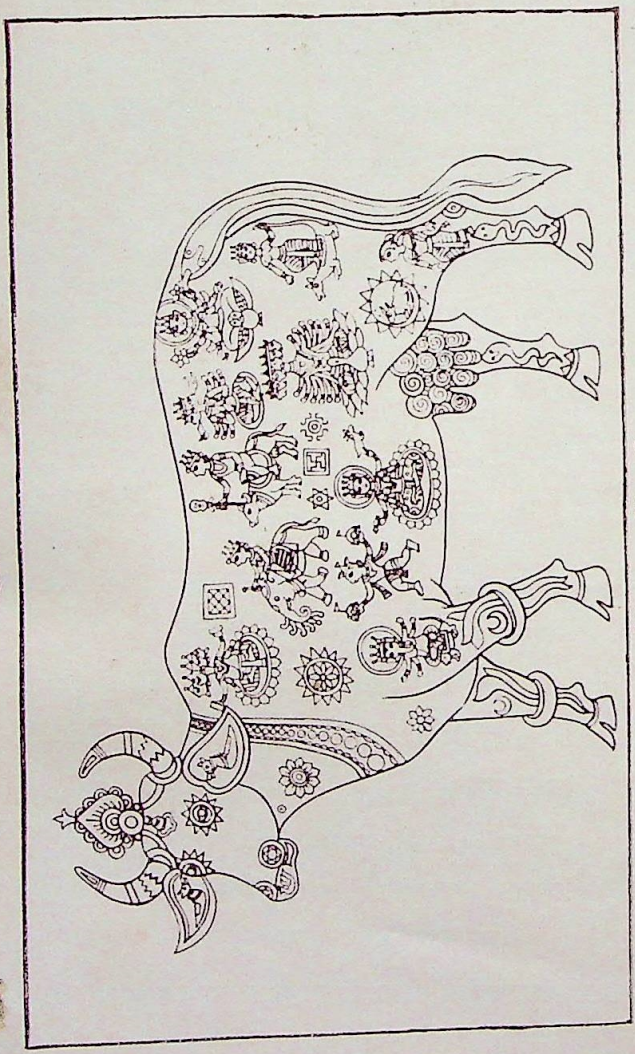

सर्वदेवमयी गोमाता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रीगोमाता

आरति श्रीगैया - मैयाकी ।
आरति - हरनि विश्वधैयाकी ।।टेक।।
अर्थ - काम - सद्धर्म - प्रदायिनि,
अविचल अमल मुक्तिपददायिनि ।
सुर - मानव सौभाग्यविधायिनि,
प्यारी पूज्य नंद - छैयाकी ।।आरति०।।
अखिल विश्व प्रतिपालिनि माता,
मधुर अमिय दुग्धान्न प्रदाता ।
रोग - शोक - संकट परित्राता,
भवसागर हित दृढ़ नैयाकी ।।आरति०।।
आयु - ओज - आरोग्यविकाशिनि,
दुःख-दैन्य - दारिद्र्य - विनाशिनि,
सुषमा - सौख्य - समृद्धि - प्रकाशिनि,
विमल विवेक-बुद्धि-दैयाकी ।।आरति०।
सेवक हो, चाहे दुखदाई,
सम पय - सुधा पियावति माई ।
शत्रु - मित्र सबको सुखदाई,
स्नेह-स्वभाव-विश्व-जैयाकी ।।आरति०।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रातःकालीन प्रार्थना

कर प्रणाम तेरे चरणोंमें लगता हूँ अब तेरे काज ।
पालन करनेको आज्ञा तव मैं नियुक्त होता हूँ आज ।।

अंतरमें स्थित रहकर मेरे बागडोर पकड़े रहना ।
निपट निरंकुश चंचल मनको सावधान करते रहना ।।

अन्तर्यामीको अन्तःस्थित देख सशङ्कित होवे मन ।
पाप - वासना उठते ही हो नाश लाजसे वह जल भुन ।।

जीवोंका कलरव जो दिनभर सुननेमें मेरे आवे ।
तेरा ही गुणगान जान मन प्रमुदित हो अति सुख पावे ।।

तू ही है सर्वत्र व्याप्त हरि ! तुझमें यह सारा संसार ।
इसी भावनासे अंतरभर मिलूँ सभीसे तुझे निहार ।।

प्रतिपल निज इन्द्रियसमूहसे जो कुछ भी आचार करूँ ।
केवल तुझे रिझानेको, बस, तेरा ही व्यवहार करूँ ।।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रार्थना

माँगूँगा न भुक्ति - मुक्ति, माँगूँगा न भोग - योग,
देना मुझे कसकभरी पीड़ाका व्यवहार।
करना मत किसीकी कृपाका पात्र तुम्हें छोड़,
देना मत किसीकी प्रशंसाका व्यर्थ भार॥

करना मत किसीके मृदु जीवनका कण्टक मुझे,
करना मत किसीकी भोली आशाका आधार।
करना मत किसीके भी उत्पीड़न - योग्य मुझे,
मारा न जाय किसी दुर्बलका अधिकार॥

मेरा स्वत्व, मेरा सुख देखूँ न छीना किसने,
मेरा सर्वस्व रहे सबहीका उपहार।
मुझको सताकर हँस पाये कोई क्षण एक,
ऐसे क्षणोंसे बने जीवन सब, सरकार॥

कोई न जाने मुझे, कोई न माने मुझे,
कोई न पूछे मेरे मानसका समाचार।
जगतीके पाप - परिणाम मैं भोगूँ,
और पावें सब सुख - शान्ति मेरे पुण्य - अधिकार॥

दे यदि सकें तो दे दें और यह इतना प्रभु,
छूटे तन सुरसरि - तट कहते जय जगदाधार।
कोई न रोये - धोये, कोई न कष्ट पाये,
पेट उससे भर लेवें प्राणी भी दो चार॥

—सुदर्शन सिंह 'चक्र'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्पाञ्जलि

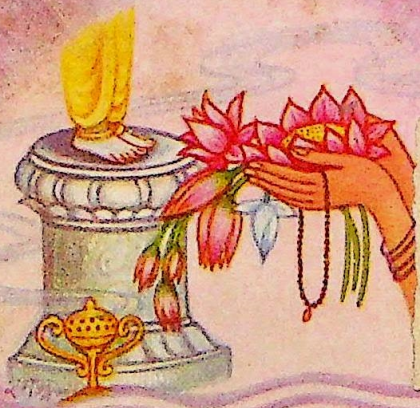

समुद सुगन्धित सुमन ले सु-मन सु-भक्ति सु-धार ।
पुष्पाञ्जलि अर्पण करूँ देव ! करो स्वीकार ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE